KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 4

विचारक, विश्वास और इमारतें
सांस्कृतिक विकास (600 ई.पू.-600 ई.)

भाग - 7

प्रीतेश जोशी

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इमारतें
- स्तूप, चैत्य
- मंदिर

क्या हम सब कुछ देख समझ सकते हैं?

इस अध्याय में अब तक हमें हमारे अतीत की समृद्ध दृश्य परंपराओं की एक झलक मिल चुकी है।

ये दृश्य परंपराएँ ईंट और पत्थर से निर्मित स्थापत्य कला, मूर्तिकला ओर चित्रकला के रूप में हमारे सामने आई हैं।

समय के बहाव में बहुत कुछ नष्ट हो गया है लेकिन जो बचा है और संरक्षित है वह हमें उन भव्य कलाकृतियों के निर्माताओं जैसे मूर्तिकारों, राजगीरों और वास्तुकारों की दृष्टि से परिचित कराता है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

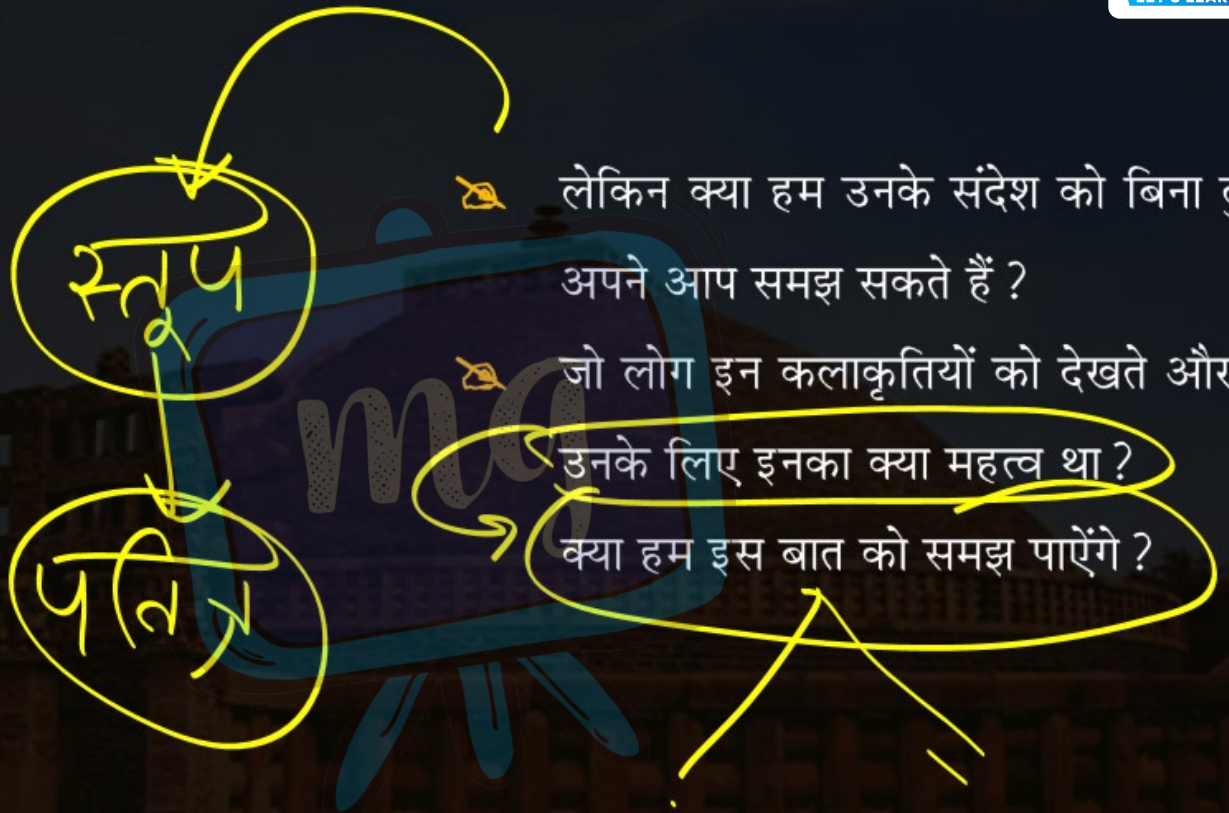

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

यूनान

अनजाने को समझने की कोशिश

- यूरोप के विद्वानों ने उन्नीसवीं सदी में जब देवी-देवताओं की मूर्तियां देखीं तो वे उनकी पृष्ठभूमि और महत्व को नहीं समझ पाये।
- कई सिरों और हाथों वाली या मनुष्य और जानवर के रूपों को मिलाकर बनाई गई मूर्तियां उन्हें विकृत लगती थीं और कई बार वे घृणा से भर जाते थे।
- इन शुरू-शुरू के विद्वानों ने ऐसी अजीबोगरीब मूर्तियों की समझ बनाने के लिए उनकी तुलना एक ऐसी परंपरा से की जिससे वे परिचित थे। यह थी प्राचीन यूनान की कला परंपरा।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- हालांकि वे प्रारम्भिक भारतीय मूर्तिकला को यूनान की कला से निम्न स्तर का मानते थे।
- बुद्ध और बौधिसत्त की मूर्तियों की खोज से वे काफी उत्साहित हुए। क्योंकि ये मूर्तियां यूनानी परंपराओं से प्रभावित थीं।
- ये मूर्तियां तक्षशिला और पेशावर जैसे उत्तर-पश्चिम के नगरों में मिली थी। इन इलाकों में 200 ई. पू. में भारतीय यूनानी शासकों ने राज्य किया था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

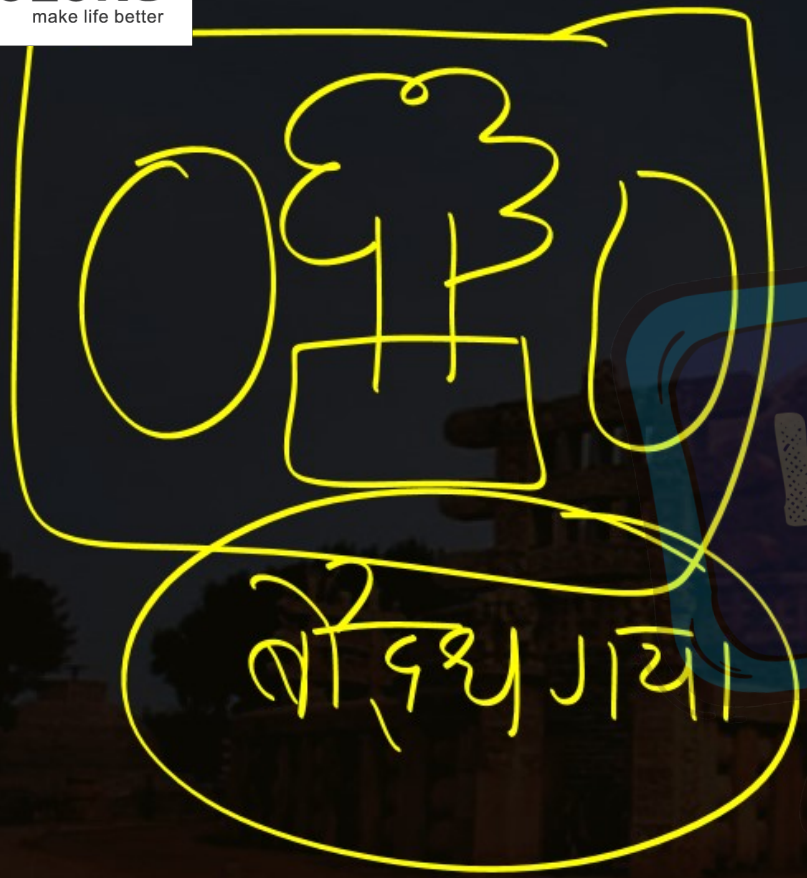

- ये मूर्तियां यूनानी मूर्तियों से काफी मिलती-जुलती थीं क्योंकि ये (यूरोपीय विद्वान) विद्वान यूनानी परंपरा से परिचित थे। इसलिए उन्होंने इन्हें भारतीय मूर्ति-कला का सर्वश्रेष्ठ नमूना माना।
- इसलिए इन विद्वानों ने इस कला को समझने के लिए एक तरीका अपनाया –

"परिचित चीजों के आधार पर अपरिचित चीजों को समझने का पैमाना तैयार करना।"

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

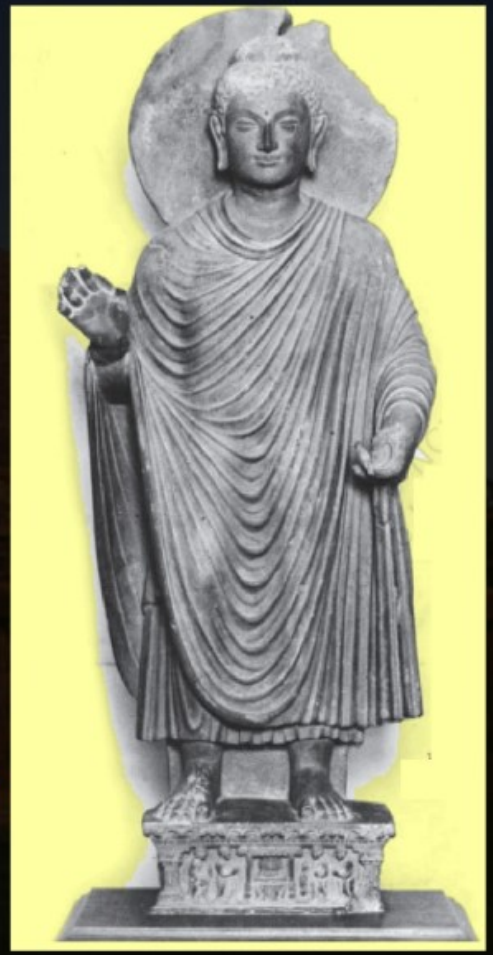

गांधार का एक बोधिसत्त
उनके कपड़ों और केश विन्यास यूनानी
परंपरा जैसे हैं।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

यदि लिखित और दृश्य का मेल नहीं :-

- भारतीय मूर्तियों की यूनानी मूर्तियों से तुलना कर निष्कर्ष निकालने की अपेक्षा लिखित ग्रंथों से जानकारी इकट्ठी करना, निश्चय ही ज्यादा बेहतर तरीका है।
- लेकिन यह बहुत आसान नहीं है। इसका सबसे दिलचस्प उदाहरण है :-

महाबलीपुरम (तमिलनाडु) में एक विशाल चट्टान पर उत्कीर्ण मूर्तियां।

KOLORS
make life better

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अभ्यास प्रश्न

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1) उपनिषद
2) नियति
3) भौतिक

1. क्या उपनिषदों के दार्शनिकों के विचार नियतिवादियों और भौतिकवादियों से भिन्न थे? अपने जवाब के पक्ष में तर्क दीजिए।

उत्तर : उपनिषदों के अनुसार दार्शनिकों के विचार :-

उपनिषदों के समय लोग कई बातें जानने के बड़े उत्सुक थे। जैसे वे जानना चाहते थे कि –

(i) जीवन का अर्थ क्या है?

(ii) मृत्यु के बाद जीवन की संभावना है क्या?

(iii) क्या पुनर्जन्म अतीत के कर्मों के आधार पर होता है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नियतिवाद

निर्धारित

बन्धसार

- उपनिषदों में ब्रह्म, आत्मा, कर्म, पुनर्जन्म तथा मोक्ष संबंधी दार्शनिक विचारों की विवेचना है।
- उपनिषदों के अनुसार आत्मा बहुत सूक्ष्म होती है लेकिन वह सर्वव्यापक है।

नियतिवाद – ऐसी परंपरा के लोग जो यह विश्वास करते हैं कि सब कुछ पूर्व-निर्धारित है।

- यह आजीविका परंपरा के लोग कहलाते हैं।
- मनुष्य के सुख-दुख निर्धारित मात्रा में माप कर दिये गये हैं। इन्हें बदला नहीं जा सकता और न ही बढ़ाया या घटाया जा सकता है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भौतिकवादी – ये भौतिक वस्तुओं से सुख प्राप्त करने वाली विचारधारा के लोग हैं जो देह या शरीर को ही आत्मा मानते हैं।

- ये लोकायत परंपरा के लोग कहलाते हैं।
- इनका मानना था कि संसार में दान देना, यज्ञ करना, या चढ़ावा देना जैसी कोई चीज नहीं होती है।
- मनुष्य की मृत्यु के साथ ही चारों तत्व नष्ट हो जाते हैं जिनसे वह बना है तथा आत्मा अंतरिक्ष का हिस्सा बन जाती है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

पंचमहाव्रत

2. जैन धर्म की महत्वपूर्ण शिक्षाओं को संक्षेप में लिखिए।

उत्तर : जैन धर्म के पांच महाव्रत हैं – ये जैन, साधु व साध्वियों के व्रत हैं –

1. अहिंसा – मन, वचन व कर्म से न किसी को दुखी करना, न ही किसी की हत्या करना।
2. सत्य – किसी भी परिस्थिति में असत्य नहीं बोलना चाहिए।
3. अस्तेय – किसी भी वस्तु या विचारों की चोरी न करना।
4. अपरिग्रह – संग्रह नहीं करना।
5. ब्रह्मचर्य – परमात्मा में विचरना।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

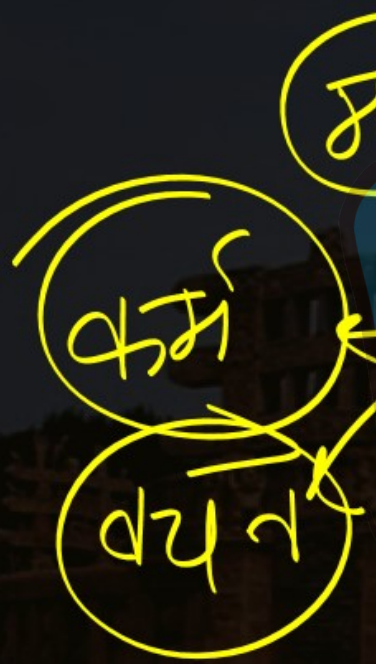

अहिंसा :- यह जैन धर्म की सबसे महत्वपूर्ण अवधारणा है। जिसके अनुसार सम्पूर्ण विश्व प्राणवान है। इनके अनुसार पत्थर, चट्टान और जल में भी जीवन है।

- जीवों खासकर इन्सानों, जानवरों, पेड़-पौधों तथा कीड़ों-मकोड़ों को मारना नहीं चाहिए।
- जैन धर्म के अहिंसा के सिद्धांत ने संपूर्ण भारतीय चिंतन जगत को प्रभावित किया।
- जैन मान्यता के अनुसार जन्म और पुनर्जन्म का चक्र कर्म के द्वारा निर्धारित होता है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

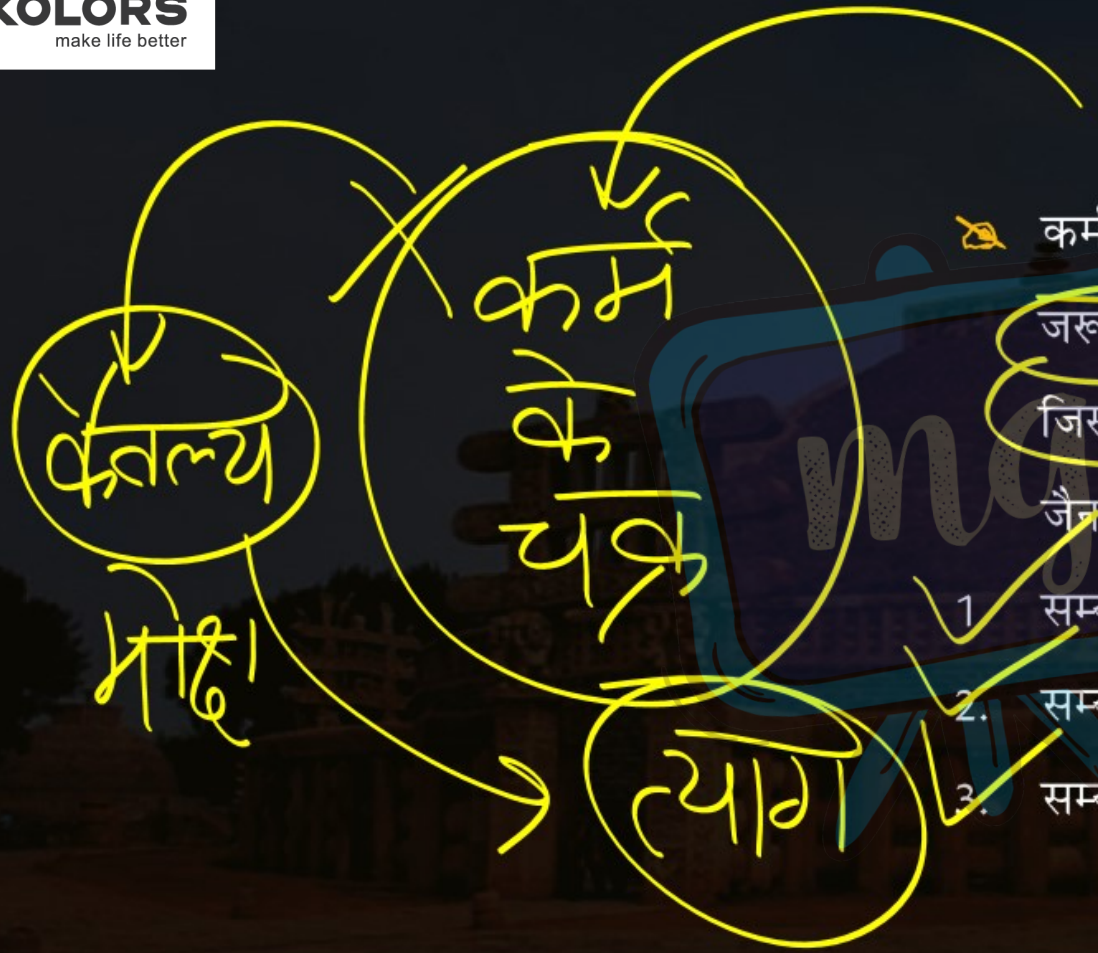

- कर्म के चक्र से मुक्ति के लिए त्याग और तपस्या की जरूरत होती है जो संसार के त्याग से ही संभव है जिसके लिए विहारों में निवास करना अनिवार्य है।
- जैन धर्म में मोक्ष प्राप्ति का आधार त्रिरत्न हैं –
  1. सम्यक ज्ञान
  2. सम्यक चरित्र
  3. सम्यक दर्शन

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

X अमरावती
↳ नष्ट → मूर्तिकला

सांची
↳ यहीं रखी
↳ संग्रहालय

3. सांची के स्तूपों के संरक्षण में भोपाल की बेगमों की भूमिका की चर्चा कीजिए।

उत्तर : सांची के स्तूप के संरक्षण में भोपाल की बेगमों (i) शाहजहाँ बेगम तथा (ii) सुल्तानजहाँ बेगम की भूमिका महत्वपूर्ण रहीं।

भोपाल की बेगमों ने इस स्तूप के रख-रखाव व मरम्मत के लिए समय-समय पर धन का अनुदान दिया।

धन

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

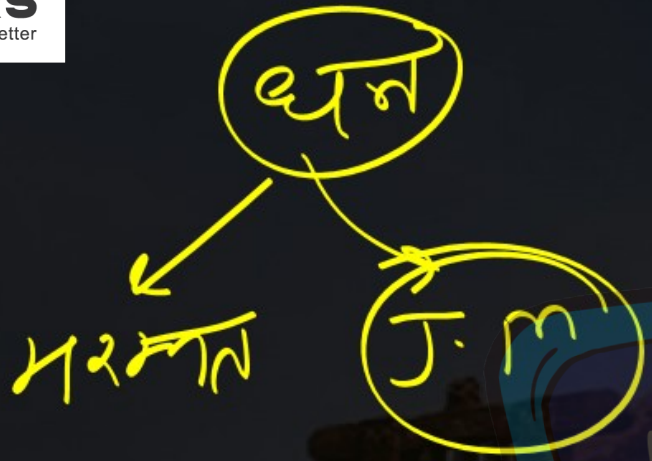

- सुल्तानजहाँ बेगम ने वहां एक संग्रहालय तथा अतिथिशाला बनाने का अनुदान दिया।
- सांची के स्तूपों पर जॉन मार्शल ने अनेक पुस्तकें लिखीं जिनके प्रकाशन में भी सुल्तानजहाँ बेगम में अनुदान दिया।
- जॉन-मार्शल ने इन महत्वपूर्ण ग्रंथों को सुल्तानजहाँ को समर्पित कर दिया।
- प्रारम्भ में फ्रांसिसियों तथा बाद में अंग्रेजों ने सांची के पूर्वी तोरणद्वार को अपने देश ले जाकर संग्रहालय में प्रदर्शित करने की इजाजत मांगी।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अपनी जगह

- भोपाल की इन बेगमों ने प्लास्टर की प्रतिकृति से संतुष्ट कर दिया।
- इस प्रकार मूल कृति भोपाल राज्य में अपनी जगह पर ही सुरक्षित रही।



KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

4. निम्नलिखित संक्षिप्त अभिलेख को पढ़िये और जवाब दीजिए–

महाराज हुविष्क (एक कुषाण शासक) के तैतीसवें साल में गर्म मौसम के पहले महीने के आठवें दिन त्रिपिटक जानने वाले भिक्खु बल की शिष्या, त्रिपिटिक जानने वाली बुद्धमिता के बहन की बेटी भिक्खुनी धनवती ने अपने माता–पिता के साथ मधुवनक में बोधिसत्त की मूर्ति स्थापित की।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

30-Oct 2023

(क) धनवती ने अपने अभिलेख की तारीख कैसे निश्चित की ?

उत्तर : धनवती ने अपने अभिलेख की तारीख कुषाण शासक महाराज हुविष्क के शासनकाल की सहायता से निश्चित की।

यह तारीख हुविष्क के शासनकाल के तैंतीसवें साल की ग्रीष्म ऋतु के पहले महीने को आठवां दिन है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

धनाभिलेख

रिश्तेदार

(ख) आपके अनुसार उन्होंने बोधिसत्त की मूर्ति क्यों स्थापित की ?

उत्तर : धनवती एक बौद्ध भिक्षुणी थी।

- उसकी बौद्ध धर्म में अत्यधिक श्रद्धा थी।
- अतः बौद्ध धर्म के प्रति अपनी श्रद्धा एवं सम्मान को प्रकट करने के लिए उसने बोधिसत्त की मूर्ति स्थापित की।

(ग) वे अपने किन रिश्तेदारों का नाम लेती हैं ?

उत्तर :- वे अपनी मौसी बुद्धमिता तथा अपने माता-पिता का नाम लेती है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

(घ) वे कौनसे बौद्ध ग्रंथों को जानती थीं ?

उत्तर :- वे बौद्ध ग्रंथों त्रिपिटकों को जानती थीं।

(ड.) उन्होंने ये पाठ किससे सीखे थे।

उत्तर :- उन्होंने ये पाठ अपने गुरू भिक्षु बल से तथा मौसी बुद्धमिता से सीखे थे।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

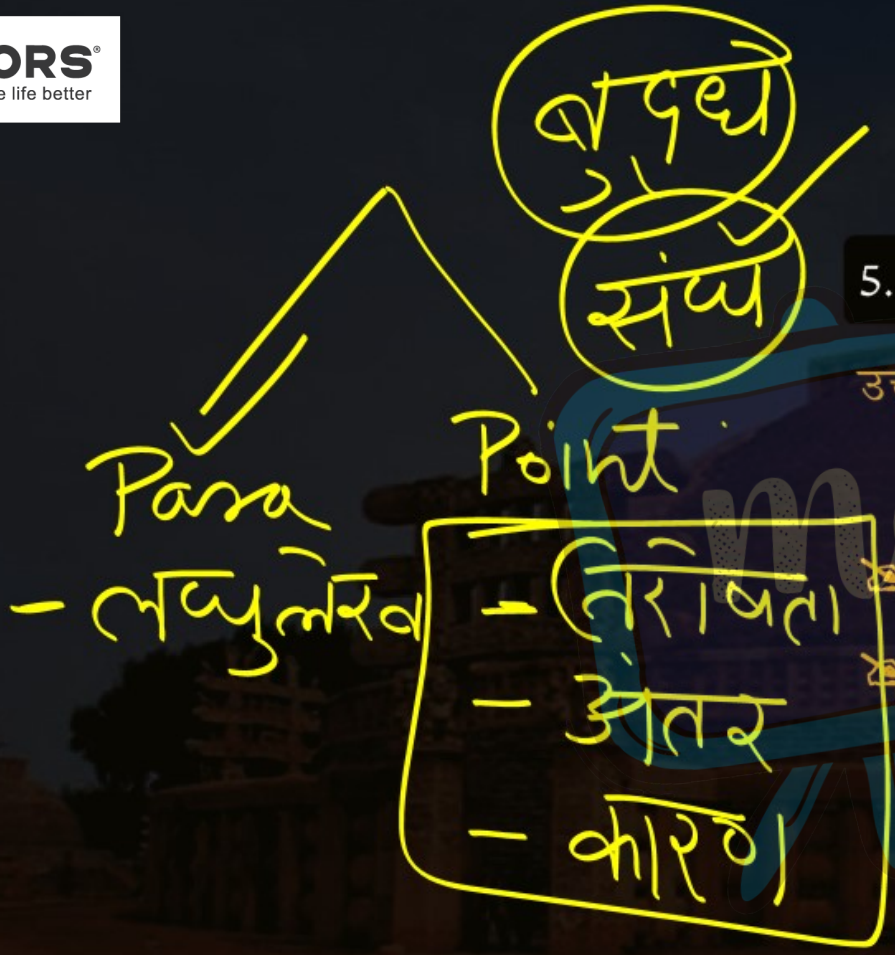

5. आपके अनुसार स्त्री-पुरूष संघ में क्यों जाते थे ?

उत्तर : बुद्ध के शिष्यों का एक दल तैयार हो गया था इसलिए उन्होंने संघ की स्थापना की।

- इसमें आने पर भिक्षु धम्म के शिक्षक बन जाते थे।
- प्रारम्भ में सिर्फ पुरूष ही संघ में सम्मिलित हो सकते थे। लेकिन बाद में बुद्ध के प्रिय शिष्य आनंद ने बुद्ध को समझाकर संघ में महिलाओं को आने की अनुमति प्राप्त की।
- बुद्ध की उपमाता महाप्रजापति गोतमी संघ की पहली महिला भिक्षुणी थी।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

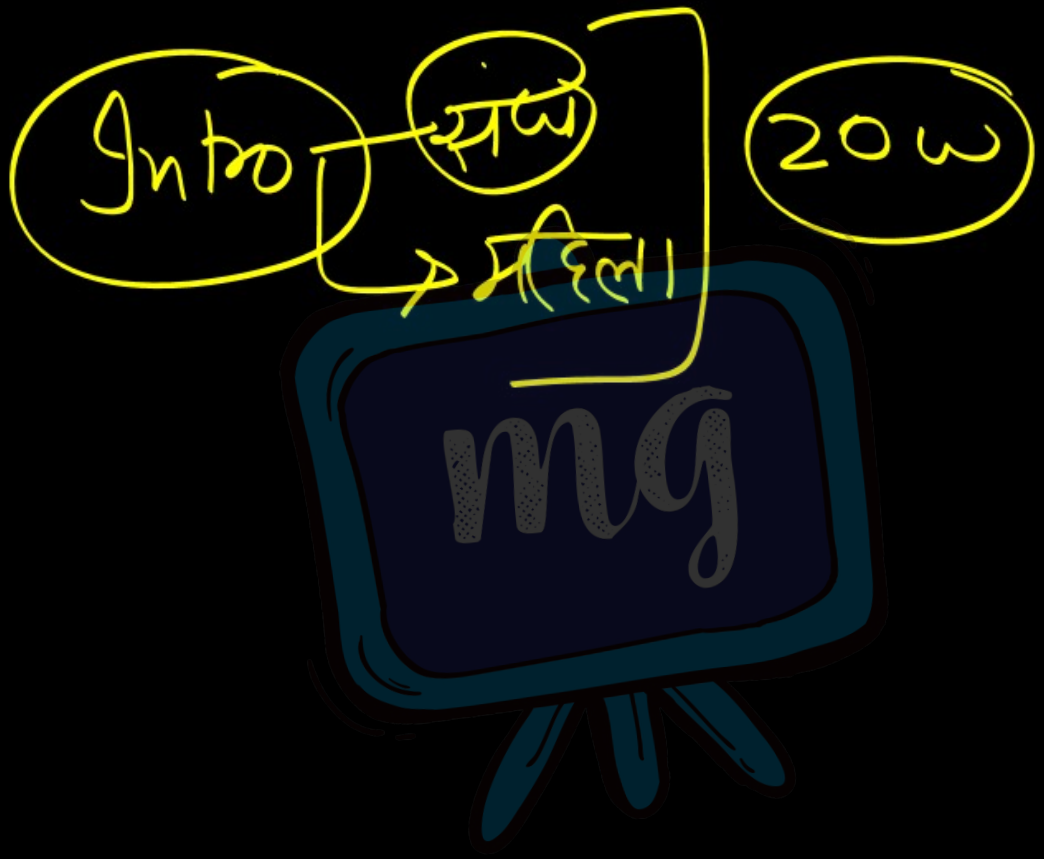

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

लोकतांत्रिक

राज

- कई महिला संघ में आकर धम्म की उपदेशिकाऐं बन गईं।
- आगे चलकर वे थेरी बनीं जिसका मतलब है – "ऐसी महिलाऐं जिन्होंने निर्वाण प्राप्त कर लिया हो।"
- एक बार संघ में आ जाने पर सभी को बराबर माना जाता था। क्योंकि भिक्खु और भिक्खुनी बनने पर उन्हें अपनी पुरानी पहचान को त्याग देना पड़ता था।
- संघ की संचालन पद्धति इस प्रकार की थी कि या तो लोग बातचीत के द्वारा एकमत होने की कोशिश करते थे अथवा मतदान द्वारा निर्णय लिया जाता था। अतः लोकतांत्रिक पद्धति थी।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- बुद्ध के समय तथा उनके बाद भी लोग बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित हुए। क्योंकि लोग समकालीन धार्मिक प्रथाओं से असंतुष्ट थे तथा उस युग में हो रहे सामाजिक बदलावों से भी उलझनों में थे।
- बौद्ध शिक्षाओं में जन्म आधारित श्रेष्ठता की बजाय अच्छे आचरण और मूल्यों को महत्व दिया गया इसलिए महिलाऐं और पुरूष इस धर्म की ओर आकर्षित हुए।
- साथ ही स्वयं से छोटे और कमजोर लोगों से 'मित्रता और करूणा' के भाव भी लोगों को बहुत भाये।